पंचम अध्याय

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं व्याख्या

प्रस्तावना

किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग होता है शोध का सारांश । एक उत्तम शोध कार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष शोध विधियों के सम्यक प्रयोग एवं तर्क संगत व्याखाओं पर आधारित होते हैं। उनमें वस्तुनिष्ठता होती है। वह अपने निष्कर्ष के द्वारा ही अपने शोध कार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सकता है, या यों कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि बिना निष्कर्ष के निकले उसके शोध कार्य को अपूर्ण माना जाता है।

जिस प्रकार किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उद्देश्यों की आवश्यकता होती है। बिना उद्देश्यों के कोई भी कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोध कार्य के पूर्ण हो जाने पर निष्कर्ष आवश्यक होते हैं और उन्हीं प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से ही शोध कार्य की शैक्षिक उपयोगिता के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव दिये जा सकते हैं।

जिस प्रकार एक माली बीज बोता है, उसमें खाद, पानी देता है, उसकी देखभाल करता है तथा उम्मीद करता है कि ये बीज फसल के रूप में परणित होंगे। ऐसा होने पर ही उसकी मेहनत सफल होती है अन्यथा उसके द्वारा किये गये कार्य का कोई मतलब नहीं निकलता इसी प्रकार चयन की समस्या के सम्बंध में निर्धारित किये गये उद्देश्यों की पूर्ति हो जाऐ तो उसका अनुसंधान कार्य पूर्णतया सफल माना जाता है।

अनुसंधान कार्य चयन की समस्या की राह है तथा निष्कर्ष एवं सुझाव उसकी मंजिल। अतः एक अनुसंधान कार्य में निष्कर्ष व सुझाव का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन के लक्ष्यों एवंम् प्राकल्पनाओं के सन्दर्भ में विश्लेषित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं क्योंकि हम यह कह सकते हैं कि किसी शोध अध्ययन में उस शोध के निष्कर्ष महत्वपूर्ण अंग होते हैं। इसके बिना शोध अर्थहीन होता है।

शोध सारांश

किसी भी समाज समुदाय में सर्वांगीण विकास में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या सांस्कृति हो लेकिन इन सबसे ज्यादा सर्वप्रथम शैक्षिक विकास प्रमुख स्थान रखता है। भारत में सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था और उन्होनें शिक्षा के उत्थान के लिये कार्य भी किये। उन्होने यह अनुभव किया कि पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान केवल शैक्षणिक सुधार द्वारा ही संभव है। शिक्षा के स्तर के आधार पर ही किसी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि शिक्षा का संस्कृति के साथ अभूतपूर्व संबंध होता है। इसलिये विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति एवं उसके वातारण के बीच परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है और वह इन सबसे निर्देशित होता है। अतः शिक्षा संस्कृति पर निर्भर है और संस्कृति शिक्षा से संबंधित है।

आदिवासी नाम उन लोगों को दिया जाता है जो पहले से ही इन क्षेत्रों में बसे हुए थे। इनके पिछड़े हुए होने का प्रमुख कारण आदिवासी शिक्षा का स्तर अन्य जातियों से निम्नतम स्तर पर होना है। जनजाति के लोग आर्थिक क्षेत्र में पराश्रित, शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए और सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक कष्टभोगी, अलगाव व अस्पृश्यता के शिकार रहे है जहां तक आदिवासियों का संबंध है उनके सबसे बड़ी समस्या या कठिनाई अलगांव है जिसके फसलस्वरूप इनमें शिक्षा का अभाव है।

"सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रथम अध्याय में शोध के विषय **"सिरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"** पर चर्चा की गयी है । शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताया गया हैए अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में अध्ययन किया गया है अध्ययन का औचित्य बताया गया है । अध्ययन के उद्देश्य पर चर्चा की गया है तथा परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई है तथा शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है अध्ययन का परिसीमन बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में साहित्य के पुनरवलोकन का अध्ययन किया गया है । इस अध्याय में पूर्व में किए गए शोध कार्यों एवं प्रस्तुत अध्ययनों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तावित शोध के क्षेत्र में पहचानी गई रिक्तता को बताया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि का विवरण प्रस्तुत किया गया है शोध में प्रयोग में लिए गये शोध न्यादर्श की व्याख्या की गयी है शोध में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा सारणी एवं तालिकाओ के माध्यम से उनका प्रस्तुतीकरण किया गया । विश्लेषण के प्राप्त परिणाम निम्न हैरू–

तालिका :1 कुल 240 छात्रों में से 76 छात्रों ने यह कहा कि निजीविद्यालय में कक्षा में संसाधनों का अभाव है जबकि 164 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 173 छात्रों ने उनकी कक्षा में संसाधनों का अभाव से सहमति दिखाते हुए अपना जवाब दिया जबकि केवल 67 छात्र ने कहा कि अपनी कक्षा में संसाधनो का अभाव नहीं है। अतः यह यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय कि कक्षाओं में निजी विद्यालय की तुलना में कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

तालिका :3 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से केवल 55 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि शैक्षिक गतिविधियों को वह

रूचिपूर्ण समझते है जबकि 185 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए अपनी अरूचि दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षा में शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 98 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियों को रूचिपूर्वक वह समझते है जबकि केवल 142 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में भी शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्र कक्षाउपरान्त गतिविधियों को रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

तालिका :6 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है, तो निजीविद्यालय के कुल 96 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में दिया, जबकि 144 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 146 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है जबकि केवल 94 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना राजकीय विद्यालय की तुलना में कम करना पड़ता है।

तालिका :9 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है, तो निजी विद्यालय के 114 छात्र ने सहमति दिखायी जबकि 126 छात्रों ने अपनी असहमति बतायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 124 छात्रों ने इस कथन का सहमत किया व बाकि के 116 छात्रों ने इन्कार किया। अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालय के छात्रों के विचारों में ज्ञान अर्जन अध्यापको के द्वारा प्रश्न–उत्तर करते समय अधिक होता है जबकि निजी विद्यालयों में इसकी तुलना में कम होता ळें

तालिका :11 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 181 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनकी कक्षा का संचालन निरन्तर चलता है व केवल 59 छात्रों ने नियमित संचालन न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में कक्षाओं का संचालन निरन्तर नियमित रूप से चलता रहता है।

तालिका :14 जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 68 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके अन्य काम भी करना पडता है व 176 छात्रों ने कहा की वह कोई अन्य काम नहीं करते है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 78

छात्रों ने अपनी सहमति बतायी उन्हें पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है जबकि केवल 162 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के अत्यधिक छात्र अध्ययन के अलावा अन्य कार्य नहीं करते है।

परिकल्पना परीक्षण

H1 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.97546) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H2 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.29329) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं

यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H3 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.07288) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

H4 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55258) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतरं है।

H5 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.39801) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

H6 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55405) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

H7 जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.7984) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं अभिभावकों में शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

सुझाव –

सभी बच्चों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें कम से कम अच्छी माध्यमिक स्तर की योग्यता रखने वाले शिक्षक पढ़ाएं। इसलिए, सरकारों को अच्छे शिक्षक उम्मीदवारों के दायरे को बढ़ाकर उत्तर माध्यमिक शिक्षा की उपलब्धता में सुधार करने के लिए निवेश करना चाहिए। यह सुधार विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगा यदि बेहतर शिक्षित महिला अध्यापकों के पूल को उपेक्षित क्षेत्रों में बढ़ाया जाए। कुछ देशों में इसका अर्थ है कि शिक्षण में और अधिक महिलाओं को आकर्षित करने के लिए सकारात्मक उपाय लागू करने होंगे।

नीति निर्माताओं को अपना ध्यान अल्प–प्रतिनिधित्व वाले समूहों से लेने पर ध्यान देने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की भी आवश्यकता है, जैसे सजातीय अल्पसंख्यक, जो अपने समुदायों में सेवा कर सकें। ऐसे शिक्षक सांस्कृतिक संदर्भ और स्थानीय भाषा से परिचित होते हैं और उपेक्षित बच्चों के शिक्षा अवसरों में सुधार कर सकते हैं।

सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे सभी बच्चों की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। शिक्षकों को कक्षाओं में जाने से पहले उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए जो पढ़ाए जाने वाले विषयों के ज्ञान तथा शिक्षण पद्धतियों के बीच ज्ञान के बीच संतुलन पैदा कर सकें। सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत पर्याप्त कक्षा शिक्षण अनुभव को प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि वे योग्य शिक्षक बन सकें। इसे शिक्षकों को व्यावहारिक कौशल प्रयास करना चाहिए ताकि बच्चों को पढ़ना सिखाया जा सके और वे बुनियादी गणित को समझ सकें। सजातीय रूप में विविध समाजों को एक से अधिक भाषा में पढ़ना

सिखाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को भी ऐसा शिक्षक तैयार करने चाहिए जो अनेक कक्षा और वर्गों को एक ही कक्षा में पढ़ा सकें और यह समझ सकें कि जेंडर भिन्नता के लिए शिक्षक का व्यवहार कैसे शिक्षा के परिणामों को प्रभावित कर सकता है। प्रत्येक शिक्षक के लिए शिक्षण कौशल को विकसित और सुदृढ़ करने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। यह शिक्षकों को कमजोर छात्रों, विशेषकर शुरुआती कक्षा में छात्रों को नए विचार उपलब्ध करा सकता है, और शिक्षकों को नए पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्तन लाने में मदद कर सकता है। अभिनव दृष्टिकोण जैसे दूरस्थ शिक्षक शिक्षा, तथा साथ ही प्रशिक्षण और परामर्श को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि सेवा–पूर्व और सेवाकालीन विषय शिक्षा, दोनों को बड़ी संख्या में शिक्षकों को दिलाया जा सके।

यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को सभी बच्चों कीशिक्षा में सुधार करने के लिए उत्कृष्ट प्रशिक्षण दिया जाए।यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकोंको वास्तविक कक्षा शिक्षण चुनौतियों का ज्ञान एवं अनुभव होतथा उनसे कैसे निपटा जाए। इसलिए नीति–निर्माताओं को ऐसे शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना सुनिचित करना चाहिए जिन्हें कक्षा शिक्षण आवश्यकताओं का पर्याप्त अनुभव हो औरजो कठिन परिस्थितियों में पढ़ाने से जूझ रहे हैं।नए योग्यता प्राप्त शिक्षकों को शिक्षण ज्ञान को कार्यकलापों में परिणत करने में समर्थ बनाना, जिससे सभी बच्चों की शिक्षा मेंसुधार हो। नीति निर्माताओं को प्रशिक्षित प्रशिक्षक उपलब्ध करानेचाहिए ताकि वे इस बदलाव के अनुरूप बन सकें।

शिक्षकों हेतु सुझाव :–

- विद्यार्थियों को अधिकाधिक ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे वे परम्परागत चिन्तन से हटकर नये वातावरण में भाग ले सकें और अपनी बुद्धि का विकास कर सकें।
- विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित ढ़ंग से समाधान करना चाहिए।
- शिक्षक समूह का नेतृत्व कर सके एवं माता–पिता के विकल्प के रूप में भूमिका निभा सकें।
- शिक्षकों को कमजोर एवं कम बुद्धि वाली छात्राओं को विशेष कक्षाएँ लगाकर समालोचना भी करनी चाहिए।
- अपने अध्यापन में शिक्षकों को प्रोजेक्ट विधि एवं समस्या विधि का उपयोग करना चाहिए ताकि छात्राएँ क्रिया शील रहकर ज्ञानार्जन कर सकें।
- विद्यालय में स्वस्थ वातावरण का संचार करना चाहिए जिससे छात्राओं की जीवन संतुष्टि एवं उनकी आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सांवेगिक बुद्धि में गुणवत्ता आ सके।
- विद्यार्थियों द्वारा अर्जित उपलब्धियों के प्रति सकारात्मक –दृष्टिकोण अपनाते हुए समय–समय पर पुरस्कार के माध्यम से पुनर्बलित किया जाना चाहिए, क्योंकि पुरस्कार अभिप्रेरणा का स्रोत है जो कि छात्राओं को उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अभिप्रेरित करता है।

भावी शोधकार्य हेतु सुझाव :–

- शोध कर्त्री ने प्रस्तुत शोध में जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थिय को न्यायदर्श के रूप में लिया है। भावी षोधकर्ता महाविद्यालयी विद्यार्थियों को भी न्यादर्ष के रूप में ले सकते हैं।

- भावी शोधकर्ता उक्त समस्या के संदर्भ में सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।
- भावी शोधकर्ता सरकारी एवं गैर–सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को उक्त अध्ययन हेतु चयनित कर सकते हैं।
- इस शोधकार्य हेतु न्यायदर्श 480 लिया गया है। भावी शोधकर्ता इससे बड़ा न्यायदर्श लेकर शोधकार्य कर सकते हैं।
- भावी शोधकर्ता धर्म एवं भौगोलिक आधार पर वर्गीकृत कर अपना शोध कार्य कर सकता है।
- इस शोध में केवल सिरोही जिले को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता इसे अन्य संभागों, राज्य स्तर एवं राष्ट्र स्तर पर भी कर सकता है।
- इस शोध में केवल शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता अन्य चर सम्मिलित कर सकता है।